

سُورَةُ الشُّورَى

Surah 42 — Ash-Shura (Consultation) • Meccan • 53 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हा मीम

2

عَسَقَ

ऐन सीन काफ़

3

كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ

(ऐ रसूल) ग़ालिब व दाना खुदा तुम्हारी तरफ़ और जो (पैग़म्बर) तुमसे पहले गुज़रे उनकी तरफ़ यूँ ही वही भेजता रहता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है गरज़ सब कुछ उसी का है

4

لَهُ ۥ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ

और वह तो (बड़ा) आलीशान (और) बुज़ुर्ग है

5

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ۚ إِلَّا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(उनकी बातों से) करीब है कि सारे आसमान (उसकी हैबत के मारे) अपने ऊपर वार से फट पड़े और फ़रिश्ते तो अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ तसबीह करते हैं और जो लोग ज़मीन में हैं उनके लिए (गुनाहों की) माफी माँगा करते हैं सुन रखो कि खुदा ही यकीनन बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

6

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا ۚ مِنْ دُونِهِ ۚ أَوْلِيَآءَ ۚ اللَّهُ حَفِیْظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۚ

और जिन लोगों ने खुदा को छोड़ कर (और) अपने सरपरस्त बना रखे हैं खुदा उनकी निगरानी कर रहा है (ऐ रसूल) तुम उनके निगेहबान नहीं हो

7

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا ۖ لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ ۚ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ ۚ فِي السَّعِيرِ

और हमने तुम्हारे पास अरबी कुरान यूँ भेजा ताकि तुम मक्का वालों को और जो लोग इसके इर्द गिर्द रहते हैं उनको डराओ और (उनको) क़यामत के दिन से भी डराओ जिस (के आने) में कुछ भी शक़ नहीं (उस दिन) एक फरीक़ (मानने वाला) जन्नत में होगा और फरीक़ (सानी) दोज़ख़ में

8

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً ۚ وَحِدَةً ۚ وَلَكِنْ يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ ۚ وَلَا نَصِيرٍ

और अगर खुदा चाहता तो इन सबको एक ही गिरोह बना देता मगर वह तो जिसको चाहता है (हिदायत करके) अपनी रहमत में दाख़िल कर लेता है और ज़ालिमों का तो (उस दिन) न कोई यार है और न मददगार

9

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ ۚ أَوْلِيَاءَ ۚ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۚ

क्या उन लोगों ने खुदा के सिवा (दूसरे) कारसाज़ बनाए हैं तो कारसाज़ बस खुदा ही है और वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर कुदरत रखता है

10

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ فَحُكْمُهُ ۚ إِلَى اللَّهِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أَنِيبُ

और तुम लोग जिस चीज़ में बाहम एख़्तेलाफ़ात रखते हो उसका फैसला खुदा ही के हवाले है वही खुदा तो मेरा परवरदिगार है मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और उसी की तरफ़ रूजू करता हूँ

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُم مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمِنَ الْأَنْعَامِ
أَزْوَاجًا ۚ يَذُرُوكُمْ فِيهِ ۚ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला (वही) है उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जिन्स के जोड़े बनाए और चारपायों के जोड़े भी (उसी ने बनाए) उस (तरफ) में तुमको फैलाता रहता है कोई चीज़ उसकी मिसल नहीं और वह हर चीज़ को सुनता देखता है

لَهُ ۥ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ ۥ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ۚ

सारे आसमान व ज़मीन की कुन्जियाँ उसके पास हैं जिसके लिए चाहता है रोज़ी को फराख कर देता है (जिसके लिए) चाहता है तंग कर देता है बेशक वह हर चीज़ से खूब वाकिफ़ है

ۚ شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ ۚ نُوحًا ۚ وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ ۚ
إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ ۚ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا ۚ فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى
الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ

उसने तुम्हारे लिए दीन का वही रास्ता मुकर्रर किया जिस (पर चलने का) नूह को हुक्म दिया था और (ऐ रसूल) उसी की हमने तुम्हारे पास वही भेजी है और उसी का इब्राहीम और मूसा और ईसा को भी हुक्म दिया था (वह) ये (है कि) दीन को क़ायम रखना और उसमें तफ़रक़ा न डालना जिस दीन की तरफ़ तुम मुशरेकीन को बुलाते हो वह उन पर बहुत शाक़ गुज़रता है खुदा जिसको चाहता है अपनी बारगाह का बरगुज़ीदा कर लेता है और जो उसकी तरफ़ रूजू करे (अपनी तरफ़ (पहुँचने) का रास्ता दिखा देता है

وَمَا تَفَرَّقُوا ۚ إِلَّا مَن ۚ بَعْدَ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا ۚ بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ ۚ سَبَقَتْ مِّن
رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ ۚ مُّسَمًّى ۚ لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا ۚ الْكُتُبَ مِّن ۚ بَعْدِهِمْ
لَفِي شَكٍّ ۚ مِّنْهُ مُرِيبٌ ۚ

और ये लोग मुतफ़र्रिक़ हुए भी तो इल्म (हक़) आ चुकने के बाद और (वह भी) महज़ आपस की ज़िद से और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से एक वक्ते मुकर्रर तक के लिए (क़यामत का) वायदा न हो चुका होता तो उनमें कबका फैसला हो चुका होता और जो लोग उनके बाद (खुदा की) किताब के वारिस हुए वह उसकी तरफ़ से बहुत सख्त शुबहे में (पड़े हुए) हैं

فَلِذَلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۚ وَقُلْ ءَامَنْتُ بِمَا أُنْزِلَ
 اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۚ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ لَنَا أَعْمَلُنَا وَلَكُمْ
 أَعْمَلُكُمْ ۚ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۚ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ

तो (ऐ रसूल) तुम (लोगों को) उसी (दीन) की तरफ बुलाते रहे जो और जैसा तुमको हुक्म हुआ है (उसी पर कायम रहो और उनकी नफ़सियानी ख्वाहिशों की पैरवी न करो और साफ़ साफ़ कह दो कि जो किताब खुदा ने नाज़िल की है उस पर मैं ईमान रखता हूँ और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे एख्तेलाफात के (दरमेयान) इन्साफ़ (से फ़ैसला) करूँ खुदा ही हमारा भी परवरदिगार है और वही तुम्हारा भी परवरदिगार है हमारी कारगुज़ारियाँ हमारे ही लिए हैं और तुम्हारी कारस्तानियाँ तुम्हारे वास्ते हममें और तुममें तो कुछ हुज्जत (व तक्रार की ज़रूरत) नहीं खुदा ही हम (क़यामत में) सबको इकट्ठा करेगा

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ ۚ بَعْدِ مَا أُسْتُجِيبَ لَهُ ۚ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ
 وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

और उसी की तरफ लौट कर जाना है और जो लोग उसके मान लिए जाने के बाद खुदा के बारे में (ख्वाहमख्वाह) झगड़ा करते हैं उनके परवरदिगार के नज़दीक उनकी दलील लगी बातिल है और उन पर (खुदा का) ग़ज़ब और उनके लिए सख्त अज़ाब है

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۚ

खुदा ही तो है जिसने सच्चाई के साथ किताब नाज़िल की और अदल (व इन्साफ़ भी नाज़िल किया) और तुमको क्या मालूम यायद क़यामत करीब ही हो

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا
 الْحَقُّ ۚ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَلٍ بَعِيدٍ

(फिर ये ग़फ़लत कैसी) जो लोग इस पर ईमान नहीं रखते वह तो इसके लिए जल्दी कर रहे हैं और जो मोमिन हैं वह उससे डरते हैं और जानते हैं कि क़यामत यक़ीनी बरहक़ है आगाह रहो कि जो लोग क़यामत के बारे में शक़ किया करते हैं वह बड़े परले दर्जे की गुमराही में हैं

اللَّهُ لَطِيفٌ ۚ بِعِبَادِهِ ۚ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ

और खुदा अपने बन्दों (के हाल) पर बड़ा मेहरबान है जिसको (जितनी) रोज़ी चाहता है देता है वह ज़ोर वाला ज़बरदस्त है

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ آخِرَةٍ نَّزِدْ لَهُ[؟] فِي حَرْثِهِ[؟] وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا
نُؤْتِهِ[؟] مِنْهَا وَمَا لَهُ[؟] فِي آخِرَةٍ مِنْ نَصِيبٍ

जो शरूष आखेरत की खेती का तालिब हो हम उसके लिए उसकी खेती में अफ़ज़ाइश करेंगे और दुनिया की खेती का
खास्तगार हो तो हम उसको उसी में से देंगे मगर आखेरत में फिर उसका कुछ हिस्सा न होगा

أَمْ لَهُمْ شُرَكَوُا[؟] شَرَعُوا[؟] لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ[؟] بِهِ اللَّهُ[؟] وَلَوْلَا كَلِمَةُ
الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ[؟] وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ[؟]

क्या उन लोगों के (बनाए हुए) ऐसे शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसा दीन मुकर्रर किया है जिसकी खुदा ने इजाज़त नहीं दी
और अगर फैसले (के दिन) का वायदा न होता तो उनमें यकीनी अब तक फैसला हो चुका होता और ज़ालिमों के वास्ते ज़रूर
दर्दनाक अज़ाब है

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا[؟] وَهُوَ وَاقِعٌ[؟] بِهِمْ[؟] وَالَّذِينَ ءَامَنُوا[؟] وَعَمِلُوا[؟]
الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَاتِ الْجَنَّاتِ[؟] لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ[؟] ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ

(क़यामत के दिन) देखोगे कि ज़ालिम लोग अपने आमाल (के वबाल) से डर रहे होंगे और वह उन पर पड़ कर रहेगा और
जिन्होंने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए वह बेहिश्त के बाग़ों में होंगे वह जो कुछ चाहेंगे उनके लिए उनके
परवरदिगार की बारगाह में (मौजूद) है यही तो (खुदा का) बड़ा फज़ल है

ذَلِكَ الَّذِي يُبَشِّرُ اللَّهُ عِبَادَهُ الَّذِينَ ءَامَنُوا[؟] وَعَمِلُوا[؟] الصَّالِحَاتِ[؟] قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى[؟] وَمَنْ يَقْتَرِفْ حَسَنَةً[؟] نَّزِدْ لَهُ[؟] فِيهَا حُسْنًا[؟] إِنَّ
اللَّهَ غَفُورٌ[؟] شَكُورٌ

यही (ईनाम) है जिसकी खुदा अपने उन बन्दों को खुशख़बरी देता है जो ईमान लाए और नेक काम करते रहे (ऐ रसूल) तुम कह
दो कि मैं इस (तबलीगी रिसालत) का अपने क़रातबदारों (अहले बैत) की मोहब्बत के सिवा तुमसे कोई सिला नहीं मांगता और
जो शरूष नेकी हासिल करेगा हम उसके लिए उसकी ख़ूबी में इज़ाफ़ा कर देंगे बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला क़दरदान है

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِنْ يَشَأِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۖ وَيَمَحُ اللَّهُ
الْبَطْلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ

क्या ये लोग (तुम्हारी निस्बत कहते हैं कि इस (रसूल) ने खुदा पर झूठा बोहतान बाँधा है तो अगर (ऐसा) होता तो) खुदा चाहता तो तुम्हारे दिल पर मोहर लगा देता (कि तुम बात ही न कर सकते) और खुदा तो झूठ को नेस्तनाबूद और अपनी बातों से हक़ को साबित करता है वह यकीनी दिलों के राज़ से खूब वाकिफ है

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ ۖ وَيَعْفُو ۖ عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ

और वही तो है जो अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है और गुनाहों को माफ़ करता है और तुम लोग जो कुछ भी करते हो वह जानता है

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ ءَامَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۖ وَالْكَافِرُونَ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ

और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम करते रहे उनकी (दुआ) कुबूल करता है फ़ज़ल व क़रम से उनको बढ़ कर देता है और काफ़िरों के लिए सख्त अज़ाब है

ۚ وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا ۚ فِي الْأَرْضِ وَلَكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ ۚ مَا يَشَاءُ ۚ
إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ

और अगर खुदा ने अपने बन्दों की रोज़ी में फराखी कर दे तो वह लोग ज़रूर (रूए) ज़मीन से सरकशी करने लगें मगर वह तो बाक़दरे मुनासिब जिसकी रोज़ी (जितनी) चाहता है नाज़िल करता है वह बेशक अपने बन्दों से ख़बरदार (और उनको) देखता है

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِّنۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوا ۖ وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۖ وَهُوَ الْوَلِيُّ
الْحَمِيدُ

और वही तो है जो लोगों के नाउम्मीद हो जाने के बाद मेंह बरसाता है और अपनी रहमत (बारिश की बरकतों) को फैला देता है और वही कारसाज़ (और) हम्द व सना के लायक़ है

وَمِنْ ءَايَاتِهِ ۚ خَلَقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَابَّةٍ ۙ ۙ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ۙ

और उसी की (कुदरत की) निशानियों में से सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करना और उन जानदारों का भी जो उसने आसमान व ज़मीन में फैला रखे हैं और जब चाहे उनके जमा कर लेने पर (भी) क़ादिर है

وَمَا اَصْبَحْكُمْ مِنْ مُّصِيْبَةٍ ۙ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا ۙ ۙ عَنْ كَثِيْرٍ ۙ

और जो मुसीबत तुम पर पड़ती है वह तुम्हारे अपने ही हाथों की करतूत से और (उस पर भी) वह बहुत कुछ माफ़ कर देता है

وَمَا اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۙ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَلِيٍّ ۙ ۙ وَلَا نَصِيْرٍ ۙ

और तुम लोग ज़मीन में (रह कर) तो खुदा को किसी तरह हरा नहीं सकते और खुदा के सिवा तुम्हारा न कोई दोस्त है और न मददगार

وَمِنْ ءَايَاتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَمِ

और उसी की (कुदरत) की निशानियों में से समन्दर में (चलने वाले) (बादबानी जहाज़) हैं जो गोया पहाड़ हैं

اِنْ يَشَآءُ يُسَكِّنِ الرِّيْحَ فَيُظْلِلْنَ رَوَاقِدَ عَلٰى ظَهْرِهِ ۙ ۙ اِنْ فِىْ ذٰلِكَ لَءَايٰتٍ ۙ ۙ لِّكُلِّ صَبَّارٍ ۙ ۙ شَكُوْرٍ

अगर खुदा चाहे तो हवा को ठहरा दे तो जहाज़ भी समन्दर की सतह पर (खड़े के खड़े) रह जाएँ बेशक तमाम सब्र और शुक्र करने वालों के वास्ते इन बातों में (खुदा की कुदरत की) बहुत सी निशानियाँ हैं

اَوْ يُوبِقُهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا ۙ ۙ وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ۙ

(या वह चाहे तो) उनको उनके आमाल (बद) के सबब तबाह कर दे

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجْدِلُونَ فِيَّ آيَاتِنَا مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ ۚ

और वह बहुत कुछ माफ़ करता है और जो लोग हमारी निशानियों में (स्वाहमास्वाह) झगड़ा करते हैं वह अच्छी तरह समझ लें कि उनको किसी तरह (अज़ाब से) छुटकारा नहीं

فَمَا أُوتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ فَمَتَّعُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ ۚ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ
ءَامَنُوا ۚ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

(लोगों) तुमको जो कुछ (माल) दिया गया है वह दुनिया की ज़िन्दगी का (चन्द रोज़) साज़ोसामान है और जो कुछ खुदा के यहाँ है वह कहीं बेहतर और पायदार है (मगर ये) खास उन ही लोगों के लिए है जो ईमान लाए और अपने परवरदिगार पर भरोसा रखते हैं

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا ۚ هُمْ يَغْفِرُونَ

और जो लोग बड़े बड़े गुनाहों और बेहयाई की बातों से बचे रहते हैं और गुस्सा आ जाता है तो माफ़ कर देते हैं

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا ۚ لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا ۚ الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ

और जो अपने परवरदिगार का हुक्म मानते हैं और नमाज़ पढ़ते हैं और उनके कुल काम आपस के मशवरे से होते हैं और जो कुछ हमने उन्हें अता किया है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ

और (वह ऐसे हैं) कि जब उन पर किसी किस्म की ज्यादाती की जाती है तो बस वाजिबी बदला ले लेते हैं

وَجَزَاءُ ۚ سَيِّئَةٍ ۚ سَيِّئَةٌ ۚ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ ۚ عَلَىٰ اللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۚ لَا
يُحِبُّ الظَّالِمِينَ

और बुराई का बदला तो वैसी ही बुराई है उस पर भी जो शख्स माफ़ कर दे और (मामले की) इसलाह कर दें तो इसका सवाब खुदा के ज़िम्मे है बेशक वह ज़ुल्म करने वालों को पसन्द नहीं करता

وَلَمَنْ أَنْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهِ ۚ فَأُولَٰئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيلٍ

और जिस पर जुल्म हुआ हो अगर वह उसके बाद इन्तेक़ाम ले तो ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ

इल्ज़ाम तो बस उन्हीं लोगों पर होगा जो लोगों पर जुल्म करते हैं और रूए ज़मीन में नाहक़ ज्यादातियाँ करते फिरते हैं उन्हीं लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ

और जो सब्र करे और कुसूर माफ़ कर दे तो बेशक़ ये बड़े हौसले के काम हैं

وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن وَلِيٍّ ۚ مِّنْ بَعْدِهِ ۚ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ ۚ مِّنْ سَبِيلٍ ۚ

और जिसको खुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसके बाद उसका कोई सरपरस्त नहीं और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब (दोज़ख़) का अज़ाब देखेंगे तो कहेंगे कि भला (दुनिया में) फिर लौट कर जाने की कोई सबील है

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشَعِينَ مِنَ الْأَذْلِ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ۚ وَقَالَ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنَّ الْخُسْرَيْنِ الَّذِينَ خَسِرُوا ۚ أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ۚ

और तुम उनको देखोगे कि दोज़ख़ के सामने लाए गये हैं (और) ज़िल्लत के मारे कटे जाते हैं (और) कनक्खियों से देखे जाते हैं और मोमिनीन कहेंगे कि हकीक़त में वही बड़े घाटे में हैं जिन्होंने क़यामत के दिन अपने आप को और अपने घर वालों को ख़सारे में डाला देखो जुल्म करने वाले दाएमी अज़ाब में रहेंगे

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ ۚ مِنْ سَبِيلٍ

और खुदा के सिवा न उनके सरपरस्त ही होंगे जो उनकी मदद को आएँ और जिसको खुदा गुमराही में छोड़ दे तो उसके लिए (हिदायत की) कोई राह नहीं

أَسْتَجِيبُوا ۚ لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ ۚ لَا مَرَدَّ لَهُ ۚ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَأٍ ۚ يَوْمَئِذٍ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيرٍ ۚ

(लोगों) उस दिन के पहले जो खुदा की तरफ से आयेगा और किसी तरह (टाले न टलेगा) अपने परवरदिगार का हुक्म मान लो (क्यों कि) उस दिन न तो तुमको कहीं पनाह की जगह मिलेगी और न तुमसे (गुनाह का) इन्कार ही बन पड़ेगा

فَإِنْ أَعْرَضُوا ۚ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِظًا ۚ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْغُ ۚ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ۚ فَرِحَ بِهَا ۚ وَإِنْ تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ ۚ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۚ

फिर अगर मुँह फेर लें तो (ऐ रसूल) हमने तुमको उनका निगेहबान बनाकर नहीं भेजा तुम्हारा काम तो सिर्फ (एहकाम का) पहुँचा देना है और जब हम इन्सान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं तो वह उससे खुश हो जाता है और अगर उनको उन्हीं के हाथों की पहली करतूतों की बदौलत कोई तकलीफ पहुँचती (सब एहसान भूल गए) बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنِئِنَّهَا ۖ وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ

सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत खास खुदा ही की है जो चाहता है पैदा करता है (और) जिसे चाहता है (फ़क़्त) बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है (महज़) बेटा अता करता है

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا ۖ وَإِنِئِنَّهَا ۖ وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ ۚ عَلِيمٌ ۚ قَدِيرٌ ۚ

या उनको बेटे बेटियाँ (औलाद की) दोनों किस्में इनायत करता है और जिसको चाहता है बांझ बना देता है बेशक वह बड़ा वाकिफ़कार क़ादिर है

﴿ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَائِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا ﴾^۱
 فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ ﴿ مَا يَشَاءُ ﴾ إِنَّهُ ﴿ عَلَىٰ حَكِيمٍ ﴾

और किसी आदमी के लिए ये मुमकिन नहीं कि खुदा उससे बात करे मगर वही के ज़रिए से (जैसे) (दाऊद) परदे के पीछे से जैसे (मूसा) या कोई फ़रिश्ता भेज दे (जैसे मोहम्मद) गरज़ वह अपने एख्तेयार से जो चाहता है पैग़ाम भेज देता है बेशक वह आलीशान हिकमत वाला है

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا ﴿۱﴾ مِّنْ أَمْرِنَا ﴿۲﴾ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَنُ
 وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا ﴿۳﴾ نَهْدِي بِهِ ﴿۴﴾ مَن نَّشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ﴿۵﴾ وَإِنَّكَ لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ ﴿۶﴾
 مُسْتَقِيمٍ ﴿۷﴾

और इसी तरह हमने अपने हुक्म को रूह (कुरान) तुम्हारी तरफ 'वही' के ज़रिए से भेजे तो तुम न किताब ही को जानते थे कि क्या है और न ईमान को मगर इस (कुरान) को एक नूर बनाया है कि इससे हम अपने बन्दों में से जिसकी चाहते हैं हिदायत करते हैं और इसमें शक़ नहीं कि तुम (ऐ रसूल) सीधा ही रास्ता दिखाते हो

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ ﴿۱﴾ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ﴿۲﴾ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ الْأُمُورُ
 (यानि) उसका रास्ता कि जो आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है (गरज़ सब कुछ) उसी का है सुन रखो सब काम खुदा ही की तरफ रूजू होंगे और वही फैसला करेगा